सन्ध्या विज्ञान रहस्य

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

सन्ध्या विज्ञान विज्ञानमय कोष की साधना है। यह ब्रह्ममार्ग की साधना है। यह साक्षात् ब्रह्मविद्या है। ''सन्ध्या'' का अर्थ है ''क्षण का सन्धिक्षण''; इस क्षण के सन्धिक्षण को ही ब्राह्ममूहूर्त कहा जाता है। इसके द्वारा ही योगीगण देहाभ्यन्तरस्थ तीनों ग्रन्थियों का भेदनकरके शिवस्वरूप हो जाते हैं। देहाभ्यन्तरस्थ तीन ग्रन्थियाँ यथा :- ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि एवं रुद्रग्रन्थि। सुषुम्नान्तर्गत योगी का चेतना जब चित्रीणी नाड़ी में अवस्थान करता है, तब योगी को विचित्र वर्णमय तथा रंगीन चित्रवैचित्र्य विश्व का रूप दर्शन होता है। चित्रिणी नाड़ी मध्यस्थ ब्रह्मनाड़ी में जब मन प्रविष्ट होता है तब योगीसाधक की सत्ता में शाश्वत् सत्यानुभूति का स्फुरण होता है। इस भूमि में योगीयों को असीम धी शक्ति का स्फुरण होता है। कारण यही है ब्रह्ममार्ग अथवा शून्य मार्ग जो आकाशवत् है। इस शून्य मार्ग में अवस्थान करने के समय, उस क्षण के सन्धिक्षण में योगीगणों की देहाभ्यन्तरस्थ ग्रन्थियों का भेदन हो जाता है। शून्यमार्ग में क्षण के सन्धिक्षण का ज्ञात होना ही सन्ध्या-विज्ञान रहस्य है।

जिस विज्ञान या विद्या द्वारा परमब्रह्मस्वरूपिणी परमाक्षरी गायत्री का ज्ञान होता है उसको सन्ध्या विज्ञान कहा जाता है। ''सन्ध्या'' साक्षात् ब्रह्मविद्यास्वरूपा योगीगणों की साधना है एवं ''गायत्री'' योगीगणों का साध्य विषय है। सन्ध्या एवं गायत्री का यह साध्य-साधन सम्बन्ध नित्य व शाश्वत है। ब्रह्मविद्यारूपा, शुद्धविद्या स्वरूपिणी देवी सन्ध्या सृष्टि के मध्य में योगीगणों की चेतना में त्रिरूप में प्रतिष्ठित हैं। जिसरूप में प्रणव त्रिपदा है, वैसेही गायत्री भी प्रणव बीज संयुक्त एवं त्रिपदा हैं। प्रणव, व्याहृति व गायत्री इन तीनों के समन्वय से एक प्रणव परिगणित होता है। प्रणवादि व्याहृति व भुर्भूवःस्वः अजपा है। इन तीनों के समन्वय से सन्ध्या का त्रिरूप निर्णीत हुआ है। यथा- प्रथम विद्यारूपिणी ब्राह्मीशक्तिरूपा ब्रह्माणी देवी है,द्वितीय- वैष्णवी शक्तिरूपा सावित्री देवी एवं तृतीय- रुद्र शक्तिरूपा रुद्राणी देवी हैं। गायत्री की पुर्ण व्याहृति के अनुसार ब्रह्ममार्ग में तीन शुभक्षणों के सन्धिक्षण में त्रिसन्ध्या का उद्भव हुआ है। इस सन्धिक्षण या सन्ध्या का प्रकाश स्थुलजगत् के आदित्य मंडल की गतिविधिओं के अनुसार निर्भरशील होता है। त्रिसन्ध्या का क्षण या समय प्रातः, मध्याह्न एवं सायाह्न काल होता है। दिवस के प्रत्येक मूहूर्त के सन्धिक्षण में विश्व प्रकृति के मध्य जो साम्य अवस्था परिलक्षित होती है, उस प्रकार की अवस्था सुक्ष्मरूप में योगीगणों के अन्तरस्थित अन्तःस्थल (कुटस्थ के मध्य सुषुम्ना, तन्मध्ये ब्रह्मनाड़ी में) में विराजमान रहती है। प्रातःकाल ब्राह्ममूहूर्त में गायत्रीरूपी सन्ध्या के जिस ब्रह्माणीरूप का पूजन किया जाता है, यौगिक तत्व में यह ही ब्रह्मग्रन्थि भेद अवस्था है। योगमार्ग में मूलाधार केन्द्र में कुलकुंडलिनी शक्ति की जागृत अवस्था को कुटस्थ के गगन मंडल पर उदीयमान सूर्य के सदृश लोहित वर्ण का ज्योति रूप में दर्शन होता है, जो मूलाधार चक्रस्थित कुंडलिनी शक्ति या स्वयंभूलिंग की ज्योति है। शक्ति सर्वप्रथम जागृत होती है, नाभि मध्यस्थ मणिपुर चक्र के पीछे ब्रह्मचक्र में जहाँ श्रीब्रह्माजी का कमलासनरूप पंचदल पद्म अवस्थित है। तत्पश्चात् योगी के ऊननाभि या शाक्तसहस्रार का जागरण होने पर मूलाधार चक्र भी जागृत हो उठता हैं। मूलाधार के साथ नाभि केन्द्र का एक प्रकारेण संयोग स्थापित होता है, जिसके फलस्वरूप उदीयमान सूर्य की सदृश ज्योति का योगीगण कुटस्थ के आकाश मंडल पर दर्शन करते हैं। तत्पश्चात् स्वाधिष्ठान चक्र में शक्ति का विकास पूर्णरूप में होने पर, उस स्तर की चेतना के स्पन्दन के सन्धिक्षण में (अर्थात् क्षण के शून्य अवस्था में) ब्रह्मनाड़ी में ''केवल'' अवस्था को प्राप्त होकर योगी का ग्रन्थि भेद हो जाता है। इसलिए नाभिस्थल पर गायत्री-सन्ध्या के ब्रह्माणी रूप का ध्यान एवं आराधना प्रशस्त है।

जब कुंडलिनी शक्ति स्वाधिष्ठान चक्र को भेदकर वक्षस्थल पर अथवा हृदय में अनाहत चक्र की ओर ऊर्ध्व दिशा में धावमान होती है तब वे हृदय को स्वर्णीम ज्योति के आलोक से प्लावित करती हैं एवं योगी की विष्णुग्रन्थि का भेदन हो जाता हैं। अनाहत चक्र जागृत होने मात्र से ही कुटस्थ में आत्मसूर्य का आविर्भाव होता है। तब हृदय केन्द्र भी सम्बित्मय हो जाता है, जिसके फलस्वरूप योगीगणों का हृदयपद्म उन्मीलित हो जाता है। इस हृदय केन्द्र में ही विष्णु का परम पद रहता है। (विष्णुग्रन्थि सहस्रार के केन्द्र स्थल में अष्टप्रकृति स्वरूपा है एवं यह अष्टकोण सदृश बिन्दु के साथ संयुक्त रहती है। इसीलिए सत्ता की अष्टप्रकृति को जय कर पाने से ही योगीसाधकों का देहाभ्यन्तरस्थ महिषासुर वध हो जाता है।) इस कारण सन्ध्या विज्ञान में विष्णुग्रन्थि की अधीश्वरी होती है, वैष्णवी शक्तिरूपा सावित्री देवी जो स्वर्णवर्ण रूपा है। इस कारण से मध्याह्न काल में हृदयस्थल पर गायत्री-सन्ध्या का ध्यान और आराधना प्रशस्त है।

जब साधक की चेतना में गायत्री-सन्ध्यारूपी रुद्राणी देवी के पूजन करने का उपयुक्त क्षण आता है, तब योगीयों की रुद्रग्रन्थि भेद हो जाती है। अर्थात् शक्ति जब आज्ञाचक्र के ऊपरिभाग में नादबिन्दु का अतिक्रमकर सहस्रारस्थित सोमधारा को अवतरित कराके मणिपुर चक्रस्थ तेजमंडल के साथ संयुक्त कर देती है तब योगीगण कुटस्थ के गगन-मंडल पर शुभ्र ज्योतिर्मय चन्द्रालोक दर्शन से आह्लादित होते हैं। इसकारण साधकगण गायत्री-सन्ध्या को रुद्राणी देवीरूप का सायाह्न में ललाट स्थल पर ध्यान एवं आराधना करते हैं।

योगी साधकगण सुषुम्नान्तर्गत ब्रह्मनाड़ी में गमनागमन करते हुए केवल अवस्था लाभपूर्वक, क्षण की शुन्य अवस्था या सन्धिक्षण में, देहाभ्यन्तरस्थ ग्रन्थित्रय को भेद करके शिवावस्था प्राप्त करते हैं एवं सन्ध्या-विज्ञान रहस्य से अवगत होते हैं। इस विश्वब्रह्मांड के सृष्टि रहस्य में तत्वगत भाव से ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादि देवगण जैसे सृष्टि के धारक व वाहक के रूप मे प्रतिष्ठित हैं, वैसे महाप्रजापति ब्रह्मा के मानसपुत्रगण भी सृष्टितत्व के एक-एक विषयों के धारक व वाहक हैं। जैसे समग्र वसुगण के अधीश्वर होते हुए ब्रह्म-पुत्र वशिष्ठ को ''वशिष्ठ'' नाम से सम्बोधित किया जाता है वैसे ही ब्रह्मा की मानस कन्या सन्ध्या से स्थूल, सुक्ष्म और कारण जगत् में सन्ध्या-विज्ञान का सृष्टि हुई है। जब मेधातिथि ऋषि के यज्ञाग्नि में सन्ध्या ने अपना देह विसर्जित किया तब भगवान श्री विष्णु की अनुकम्पा से सन्ध्या का पूर्ण डासमय शरीर दो भागों में विभक्त हो कर मेधातिथि के यज्ञाग्नि में भस्मीभूत हो गया। अग्नि देव ने सन्ध्या के शरीर को दग्ध करके श्री विष्णु की अनुमति से उस विशुद्ध देह को सूर्य मंडल में स्थापित किया और सूर्य देव ने उस शरीर को दो भागों में विभक्त करते हुए, पितृगण और देवगण की प्रीति के लिए अपने रथ पर स्थापित किया। सन्ध्या के शरीर का उर्ध्वभाग- दिवस का आदि तथा अहोरात्रि का मध्य-भाग ''प्रात:सन्ध्या'' और शेष भाग- दिवस का अंत तथा अहोरात्रि का मध्य-भाग जो पितृगणों का सतत: प्रिय है, वह ''सायं-सन्ध्या'' नाम से परिचित है। इन दो क्षणों को ब्राह्म-मूहूर्त कहा जाता है। इसलिए गायत्री को द्विपदा कहा जाता है। देवी सन्ध्या के देह त्याग के क्षण से सन्ध्या-विज्ञान का सुत्रपात हुआ है। देवी पुराण और देवी-भागवत में सन्ध्या का उपाख्यान ऐसे ही वर्णित है।

—हिन्दी अनुवाद : मातृचरणाश्रिता श्रीमती संगीता शेखानी

प्रथम साक्षात्कार

श्रीनिताइबाबा के गृह में महावतार श्रीश्रीबाबाजी महाराज के साथ श्रीश्रीबाबा का प्रथम साक्षातकार हुआ। महामुनिजी के विषय में उन्होंने नांगाबाबा के पास अवस्थान के समय सुना था एवं वे जानते थे कि महामुनिजीने नांगाबाबा से जगत् कल्याणार्थ ही श्रीश्रीबाबा को चाहा था एवं महामुनिजी के कर्म के लिए श्रीश्रीबाबा को क्रियायोग की शिक्षा लेनी पड़ी एवं लोकालय लौटना पड़ा। एकदिन सुबह श्रीनिताइबाबाके पास जाते ही उन्होंने श्रीश्रीबाबा को बोला कि आज दोपहर को श्रीश्रीबाबाजी महाराज मेरे पास आने की कृपा करेंगे। इसलिए श्रीश्रीबाबा उस दिन वहीं रहें कहीं नहीं जायें। क्ई दिनों से महामुनिजी का दर्शन करने की उनकी प्रबल इच्छा थी इसलिए श्रीनिताइबाबा के मुँह से यह सुनकर उनका मन आनन्द से भर उठा। किन्तु उस दिन दोपहर से पहले ही आकाश मेघाच्छन्न होकर प्रबल वर्षा होने लगी। फिर भी श्रीनिताइबाबा के आदेशानुसार गृह का सदर दरवाजा खुला रखा गया। क्ई गुरुभाईयों के साथ श्रीश्रीबाबा अधीर होकर आग्रहपूर्वक उनकी अपेक्षा करने लगे। प्रबल वर्षा के मध्य हठात् एकजन कोट पैन्ट पहने हुए माथे पर पगड़ी, गौरवर्ण पंजाबी सुपुरुष ने सदर दरवाजे से गृह में प्रवेश किया। सभी ने अवाक होकर विस्मयपूर्वक देखा कि नवागत व्यक्ति के इतनी बारिश में आने पर भी उनके शरीर या पोशाक पर कहीं भी जल की एक बुंद भी नहीं गिरी हुई है। उनको देखते ही श्रीनिताइबाबा ने उठकर उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। फिर अन्यान्य सकल जनों को भी प्रणाम करने को कहा। फिर हठात् आगन्तुक व्यक्ति जो श्रीश्रीबाबाजी महाराज थे श्रीश्रीबाबा की ओर उँगली दिखाकर बोलने लगे ''तुम क्रिया ठीक से नहीं करते हो?'' श्रीश्रीबाबा बोले ''गुरुमहाराज ने जो दिया है, मैं वही करता हूँ।'' यह सुनकर श्रीबाबाजी महाराज मृदु मुस्कुराये। फिर उन्होंने श्रीनिताइबाबासे क्रिया का आयोजन करने को कहा। श्रीश्रीबाबाजी महाराज के आदेश से, क्रिया आरम्भ होने के पूर्व श्रीनिताइबाबा ने क्ई गुरुभाईयोंको वहाँ से चले जाने का निर्देश दिया। फिर श्रीश्रीबाबाजी महाराज के सामने सभी क्रिया करने बैठ गये। क्रिया समाप्त होते ही सबको महसुस होने लगा मानो उन सबका शरीर ज्वर से तप्त होकर जल रहा है। फिर श्रीश्रीबाबा तथा सभी को आशीर्वाद देकर श्रीश्रीबाबाजी महाराज जैसे आये वैसे ही पुन: चले गये। बाद में श्रीनिताइबाबा ने जिज्ञासा करने पर बताया ''जिनको गृह से जाने का आदेश दिया था, वे मुनिजी का प्रचण्ड तेज सहन नहीं कर सकते थे, उनके अस्वस्थ हो जाने का भय था।''

श्रीश्रीबाबा

—श्रीश्रीमाँ रचित ''प्रज्ञान सरोज'' ग्रन्थ से संगृहीत

—हिन्दी अनुबाद : मातृचरणाश्रिता श्रीमती सुशीला सेठीया